4TH EDITION

CUET (PG) 2026

कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट

हिन्दी

2022 TO 2025

विस्तृत स्पष्टीकरण के साथ पिछले वर्ष के प्रश्न

IfAS | IFAS Publications

Copyright 2025, IFAS Publications

All rights reserved. No part of this publication or the information contained herein may be reproduced, adapted, abridged, translated, stored in a retrieval system, computer system, photographic or other systems or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, optical, digital, by photocopying, recording or otherwise, without written prior permission from the publisher. Any breach will attract legal action and prosecution without further notice.

Disclaimer: While every effort has been made to avoid errors and omissions, this publication is being sold and marketed on the understanding and presumption that neither the editors (or authors) nor the publishers nor the printers would be liable in any manner whatsoever, to any person either for an error or for an omission in this publication, or for any action to be taken on the basis of this work. Any inadvertent discrepancy noted may be brought to the attention of the publisher, for rectifying it in future editions, if published.

This book contains information obtained from authentic and highly regarded sources. Reasonable efforts have been made to publish reliable data and information, but the editors and publisher cannot assume responsibility for the validity of all materials or the consequences of their use. The editors and publisher have attempted to trace and acknowledge the copyright holders of all material reproduced in this publication and apologize to copyright holders if permission and acknowledgement to publish in this form have not been obtained. If any copyright material has not been acknowledged please write and let us know so that we may rectify it.

Trademark Notice: Publications or corporate names may be trademarks, and are used only for identification and explanation in bonafide intent without intent to infringe.

Design & Published by:
IFAS Publications

Address:
Shivranjan Complex,
Someshwar Wadi, Near
Rajwada Hotel, Baner Road,
Pune 411 008.

Contact No.: +91-95 292 88 455

Website: https://ifasonline.com

Price: ₹895.00

ISBN: 978-81-974306-8-8

प्रस्तावना

यह पुस्तक **CUET PG हिंदी** परीक्षा की तैयारी के लिए एक संपूर्ण और विस्तृत मार्गदर्शिका के रूप में प्रस्तुत की गई है।

इसमें **2022 से 2025** तक के पिछले वर्षों के प्रश्नपत्र (PYQ) शामिल हैं, जो छात्रों को परीक्षा के प्रश्नों के प्रकार और संरचना को समझने में मदद करेंगे।

प्रत्येक **विषय के बाद अभ्यास प्रश्न** दिए गए हैं, जिनके साथ विस्तृत समाधान भी है।

पुस्तक में **3 मॉक टेस्ट** भी दिए गए हैं, जो छात्रों को वास्तविक परीक्षा का अनुभव प्रदान करते हैं और उनकी तैयारी का उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

प्रत्येक प्रश्न के साथ **प्रश्न का समाधान भी** उपलब्ध कराया गया है, ताकि आप न केवल सही उत्तर जान सकें, बल्कि प्रश्नों को हल करने की प्रक्रिया भी समझ सकें। इस प्रकार, यह पुस्तक आपको न केवल समय प्रबंधन में मदद करती है, बल्कि आपके विश्लेषणात्मक कौशल को भी मजबूत बनाती है।

साथ ही, पुस्तक में प्रश्नों को **विषय और अध्याय के अनुसार व्यवस्थित** किया गया है, जिससे आप अपनी तैयारी को एक संगठित और सुव्यवस्थित तरीके से कर सकें। इससे आपको परीक्षा के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद मिलेगी।

यह पुस्तक केवल प्रश्नों के अभ्यास का माध्यम ही नहीं है, बल्कि परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्न जैसे – **हिंदी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण, इतिहास (आदिकाल से आधुनिक काल तक) प्रमुख रचनाकार, रचनाएं और प्रवृतियां, विविध विधाएं एवं रचनाकार (उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना एवं अन्य गद्य विधाएं), प्रयोजन मूलक हिंदी के विविध रूप, जनसंचार माध्यमों में हिंदी, भारतीय काव्यशास्त्र, हिंदी व्याकरण** इत्यादि का विस्तृत व्याख्या भी प्रस्तुत करता है। जिसके माध्यम से विद्यार्थियों का एक ठोस आधार तैयार होगा जो इस परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

इस पुस्तक का उद्देश्य आपको CUET PG हिंदी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए एक ठोस और प्रभावी अध्ययन सामग्री प्रदान करना है। हम आशा करते हैं कि यह मार्गदर्शिका आपकी मेहनत को सही दिशा में मार्गदर्शन करेगी और आप परीक्षा में सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करेंगे।

✨ **आपकी सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ!** ✨

कृतज्ञता ज्ञापन

सर्वप्रथम, मैं इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडीज (IFAS) के सभी छात्रों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी प्रेरणा से यह पुस्तक लिखने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं IFAS एडुटेक प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक सीईओ एवं IFAS पब्लिकेशन के निर्देशक, इंजीनियर राधेश्याम चौधरी का विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को पूर्ण करने में अपनी अमूल्य सहायता और महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान किए।

मैं **शिवम गुप्ता (UGC NET 3 TIME**) का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने उत्तरों को सत्यापित और प्रूफरीडिंग करने, समीक्षा करने तथा पुस्तक की सुनियोजित संरचना तैयार करने में मेरी सहायता की। उनके सुझाव इस पुस्तक की सामग्री को बेहतर बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण रहे।

मैं वैष्णवी भिलारे का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रश्नों को अध्याय और अनुभागवार व्यवस्थित एवं संकलित करने में सहायता प्रदान की।

मैं IFAS की संपूर्ण टीम का भी आभारी हूँ, जहाँ मैंने अपने शिक्षण कार्य को जारी रखने के साथ-साथ पुस्तक निर्माण की जटिल प्रक्रिया को और अधिक गहराई से समझने का अवसर प्राप्त किया।

यह पुस्तक सामूहिक प्रयासों का परिणाम है, और यह IFAS पब्लिकेशन टीम के सभी सदस्यों के उत्कृष्ट सहयोग के बिना संभव नहीं हो पाती। इस पुस्तक के निर्माण के दौरान, मुझे कई समर्पित और रचनात्मक व्यक्तियों के साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसके लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

विशेष रूप से, मैं गीतांजली जाधव का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने इस परियोजना की नियमित निगरानी की, और विकेंद्र मेहता का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने हमारी कल्पनाओं को सुंदर आवरण पृष्ठ एवं चित्रों के रूप में साकार किया। मैं कुलदीप सिंह राठौर और उनकी टीम का भी धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने पुस्तक के प्रारूपण (फॉर्मेटिंग) और टाइपसेटिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अंत में, मैं उन सभी व्यक्तियों को सादर नमन करता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को साकार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, किंतु जिनका नाम यहाँ उल्लिखित नहीं हो सका।

✨ **आप सभी का हृदय से धन्यवाद!** ✨

CUET PG परीक्षा के बारे में

कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (CUET) को केंद्रीय और भागीदार विश्वविद्यालयों में पीजी कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए शैक्षणिक सत्र से शुरू किया जा रहा है। कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (CUET) उम्मीदवारों को विशेष रूप से उत्तर-पूर्व, ग्रामीण और अन्य दूरदराज के क्षेत्रों से आने वाले उम्मीदवारों को समान मंच और समान अवसर प्रदान करेगा, और विश्वविद्यालयों के साथ बेहतर संपर्क स्थापित करने में मदद करेगा। एकल परीक्षा उम्मीदवारों को व्यापक पहुंच प्राप्त करने और विभिन्न केंद्रीय विश्वविद्यालयों और अन्य भागीदार
विश्वविद्यालयों में प्रवेश प्रक्रिया का हिस्सा बनने का अवसर प्रदान करेगी।

CUET PG परीक्षा पैटर्न

आवेदन का तरीका	ऑनलाइन
प्रश्नों की कुल संख्या	75
कुल मार्क	300
परीक्षा की भाषाएं	अंग्रेजी और हिंदी
परीक्षा की अवधि	150
प्रश्न का प्रकार	बहुविकल्पीय प्रश्न

अनुक्रमणिका

CUET (PG) - हिन्दी

भाग संख्या	विशिष्ट	पृष्ठ संख्या
भाग – 1:	हिंदी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण	1
भाग – 2:	हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से आधुनिक काल तक) प्रमुख रचनाकार, रचनाएं और प्रवृतियां	10
भाग – 3:	हिंदी साहित्य की विविध विधाएं एवं रचनाकार (उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना एवं अन्य गद्य विधाएं)	42
भाग – 4:	प्रयोजन मूलक हिंदी के विविध रूप	67
भाग – 5:	जनसंचार माध्यमों में हिंदी	78
भाग – 6:	भारतीय काव्यशास्त्र (शब्द शक्ति, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं काव्य लक्षण)	87
भाग – 7:	हिंदी व्याकरण (संधि, समास, काल, वाक्य विन्यास)	101

अभ्यास प्रश्न पत्र – 1 117

अभ्यास प्रश्न पत्र – 2 133

अभ्यास प्रश्न पत्र – 3 147

CUET (PG) हिंदी में पूछे गए प्रश्नों की संख्या - (2022 से 2025)

भाग		2022	2023	2024	2025
1	हिंदी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण	2	1	3	5
2	हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से आधुनिक काल तक) प्रमुख रचनाकार, रचनाएं और प्रवृतियां	29	25	22	33
3	हिंदी साहित्य की विविध विधाएं एवं रचनाकार (उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना एवं अन्य गद्य विधाएं)	31	19	15	21
4	प्रयोजन मूलक हिंदी के विविध रूप	6	7	5	2
5	जनसंचार माध्यमों में हिंदी	6	3	5	1
6	भारतीय काव्यशास्त्र (शब्द शक्ति, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं काव्य लक्षण)	4	10	13	7
7	हिंदी व्याकरण (संधि, समास, काल, वाक्य विन्यास)	10	16	12	6

भाग
1

हिंदी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण

भाग 1

हिंदी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण

पिछले वर्ष के परीक्षा प्रश्न

[2022]

1. हिंदी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन का सर्वप्रथम प्रयास किस इतिहासकार ने किया?

(1) शिवसिंह सेंगर (2) गार्सा द तासी
(3) मिश्रबंधु (4) जार्ज ग्रियर्सन

[2022]

2. आदिकाल को 'सिद्ध सामंत काल' की संज्ञा किस विद्वान ने दी है?

(1) राहुल सांकृत्यायन (2) रामकुमार वर्मा
(3) हजारी प्रसाद द्विवेदी (4) रामचंद्र शुक्ल

[2023]

3. सूची ।का सूची ।। से मिलान कीजिए:

सूची । **काल का नामकरण**	**सूची ।।** **इतिहासकार**
A. रीतिकाल	I. मिश्रबंधु
B. अलंकृत काल	II. जार्ज ग्रियर्सन
C. श्रृंगार काल	III. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
D. रीतिकाव्य	IV. रामचन्द्र शुक्ल

निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A-IV, B-I, C-III, D-II (2) A-I, B-III, C-II, D-IV
(3) A-II, B-IV, C-I, D-III (4) A-III, B-II, C-IV, D-I

[2024]

4. मिश्रबंधुओं ने प्रौढ़ माध्यमिक काल का समय माना है-

(1) 1445-1560 वि. (2) 1344-1444 वि.
(3) 1561-1680 वि. (4) 1681-1790 वि.

[2024]

5. सूची-I को सूची -II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	**सूची-II**
नाम	**प्रयोक्ता**
A. रीतिकाव्य	I. मिश्रबंधु
B. अलंकृत काल	II. रमाशंकर शुक्ल रसाल
C कलाकाल	III. आचार्य रामचंद्र शुक्ल
D. रीतिकाल	IV. जार्ज ग्रियर्सन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :

(1) A-III, B-II, C-I, D-IV (2) A-II, B-IV, C-I, D-III
(3) A-IV, B-I, C-II, D-III (4) A-IV, B-II, C-I, D-III

[2024]

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं : एक अभिकथन (Assertion A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण (Reason R) के रूप में;

अभिकथन (A): आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल को कला काल का नाम दिया।

कारण (R): मिश्र बंधुओं ने रीतिकाल को अलंकृत काल कहा है ।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(3) (A) सत्य है परन्तु (R) असत्य नहीं हैं।
(4) (A) सत्य नहीं है परन्तु (R) सत्य हैं।

[2025]

7. भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार 'प्रतिभा' के संदर्भ में कौन-से कथन सही हैं?

(A) प्रतिभा अपूर्व वस्तुओं के निर्माण की क्षमता है।
(B) प्रतिभा के दो भेद होते हैं कारयित्री प्रतिभा और भावयित्री प्रतिभा।
(C) मम्मट ने प्रतिभा को काव्य का प्रयोजन कहा है।
(D) प्रतिभा काव्य का हेतु है।
(E) प्रतिभा अभ्यास पर आश्रित होती है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(1) केवल (A), (B) और (D)
(2) केवल (A), (B) और (C)
(3) केवल (B), (C) और (D)
(4) केवल (C), (D) और (E)

[2025]

8. हिंदी साहित्येतिहास के इन कालों को कालक्रमानुसार (आरोही क्रम में) व्यवस्थित कीजिए-

(A) द्विवेदी युग (B) प्रयोगवाद
(C) प्रगतिवाद (D) छायावाद

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(1) (A), (B), (C), (D) (2) (A), (C), (B), (D)
(3) (A), (D), (C), (B) (4) (D), (A), (C), (B)

[2025]

9. हिंदी साहित्य के आदिकाल को 'बीजवपन काल' नाम किसने दिया?

(1) हजारी प्रसाद द्विवेदी (2) मिश्र बंधु
(3) महावीर प्रसाद द्विवेदी (4) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

[2025]

10. सूची- I को सूची -II से सुमेलित कीजिए:

सूची - I	नामकरण	सूची - II	इतिहासकार
(A)	आदिकाल	(I)	बच्चन सिंह
(B)	वीरगाथा काल	(II)	राहुल सांकृत्यायन
(C)	अपभ्रंश काल	(III)	हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
(D)	सिद्ध-सामंत काल	(IV)	रामचंद्र शुक्ल

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उन

(1) (A) - (I), (B) - (II), (C) - (III), (D) – (IV)
(2) (A) - (I), (B) - (III), (C) - (II), (D) – (IV)
(3) (A) - (III), (B) - (I), (C) - (IV), (D) – (II)
(4) (A) – (II), (B) – (IV), (C) - (I), (D) - (II)

[2025]

11. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने वीरगाथा काल के समय का निर्धारण कब से कब तक किया है?

(1) संवत् 1052 से 1370 तक
(2) 1375 ई. से 1700 ई. तक
(3) संवत् 1050 से 1375 तक
(4) 983 ई. से 1318 ई. तक

उत्तर कुंजी									
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**
(4)	(1)	(1)	(3)	(3)	(*)	(1)	(3)	(3)	(3)
11									
(4)									

अभ्यास प्रश्न

1. हिंदी साहित्य के काल विभाजन में 'नामकरण' की समस्या से संबंधित कौन सा कथन सही है?

(1) कालों के नामकरण में साहित्यिक प्रवृत्तियों और ऐतिहासिक संदर्भों का ध्यान रखना आवश्यक है।
(2) नामकरण केवल काल की समयसीमा के आधार पर किया जाना चाहिए।
(3) नामकरण में साहित्यिक प्रवृत्तियों की अनदेखी की जा सकती है।
(4) काल विभाजन और नामकरण की समस्या साहित्येतिहासकारों के लिए महत्वहीन है।

2. सूची-I और सूची-II में दिए गए नामों को उनके संबंधित कालखंडों से मिलाइए:

सूची-I	सूची-II
A. जार्ज ग्रियर्सन	I. आदिकाल
B. मिश्रबंधु	II. रीतिकाल
C. आचार्य रामचंद्र शुक्ल	III. चारणकाल
D. हजारी प्रसाद द्विवेदी	IV. परिवर्तन काल

सही मेल:

(1) A-I, B-III, C-II, D-IV
(2) A-II, B-I, C-IV, D-III
(3) A-III, B-IV, C-II, D-I
(4) A-IV, B-II, C-I, D-III

3. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल' ने हिंदी साहित्य के काल विभाजन में निम्नलिखित में से 'वीरगाथाकाल' के लिए कौन से ग्रंथ को भी आधार माना है?

(1) रामायण और महाभारत (2) पृथ्वीराज रासो
(3) रामचरितमानस (4) सूरसागर

4. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन (Assertion A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण (Reason R) के रूप में;

अभिकथन (A): आचार्य रामविलास शर्मा ने हिंदी साहित्य के उत्तर आधुनिक काल को "नवजागरण काल" कहा है।

कारण (R): शर्मा जी का मानना था कि इस काल में साहित्य ने सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सही उत्तर:

(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(3) (A) सत्य है परन्तु (R) असत्य नहीं हैं।
(4) (A) सत्य नहीं है परन्तु (R) सत्य हैं।

5. हिंदी साहित्य के काल विभाजन में 'आदिकाल' के अंतर्गत कौन सी काव्यधारा शामिल है?

(1) लौकिक काव्य (2) भक्ति काव्य
(3) रीतिकाव्य (4) आधुनिक गद्य

6. हिन्दी साहित्य के रीतिकाल का श्रृंगार काल' नाम निम्नलिखित में से किस इतिहासकार ने रखा है?

(1) रामचन्द्र शुक्ल (2) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(3) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (4) रामकुमार वर्मा

7. नीचे दिए गए विद्वानों के काल विभाजन को उनके द्वारा निर्धारित कालखंडों से मिलाइए:

सूची-I	सूची-II
A.मिश्र बंधु	I. अपभ्रंश काल
B. डॉ.नगेन्द्र	II. जागरण-सुधार काल
C. डॉ. रामकुमार वर्मा	III. प्रौढ़ माध्यमिक काल
D. बच्चन सिंह	IV. संधि व चारणकाल

सही मेल:

(1) A-I, B-III, C-II, D-IV (2) A-II, B-IV, C-I, D-III
(3) A-IV, B-I, C-III, D-II (4) A-III, B-II, C-IV, D-I

8. हिंदी साहित्य के काल विभाजन में 'नामकरण' के संदर्भ में कौन सा कथन गलत है?

(1) नामकरण में साहित्यिक आंदोलनों और समकालीन सामाजिक परिवर्तनों का ध्यान रखा जाता है।
(2) नामकरण केवल काल की कालावधि और ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर किया जाता है।
(3) साहित्यिक प्रवृत्तियों का ध्यान रखते हुए नामकरण किया जाता है।
(4) नामकरण का उद्देश्य केवल समय की सीमाओं को स्पष्ट करना होता है।

9. सूची-I में दिए गए कालखंडों को सूची-II में दिए गए उनके संबंधित समयावधियों से मिलाइए:

सूची-I	सूची-II
A. वीरगाथाकाल	I. सं.1050-1375 वि.
B. भक्तिकाल	II.सं. 1375-1700 वि.
C. रीतिकाल	III सं.1700-1900 वि.
D. आधुनिक काल	IV.सं.1900 से वर्तमान तक

सही मेल:

(1) A-I, B-II, C-III, D-IV
(2) A-II, B-III, C-IV, D-I
(3) A-III, B-IV, C-I, D-II
(4) A-IV, B-I, C-II, D-III

10. 'पृथ्वीराज रासो हिंदी साहित्य के किस काल में लिखा गया?

(1) भक्तिकाल (2) आदिकाल
(3) आधुनिक काल (4) रीतिकाल

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन (Assertion A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण (Reason R) के रूप में;

अभिकथन (A): आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य के मध्यकाल को "भक्ति काल" कहा है।

कारण (R): द्विवेदी जी के अनुसार, इस काल में भक्ति आंदोलन ने साहित्यिक दृष्टि से विशेष प्रभाव डाला था।

सही उत्तर:

(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(3) (A) सत्य है परन्तु (R) असत्य नहीं हैं।
(4) (A) सत्य नहीं है परन्तु (R) सत्य हैं।

12. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल को क्या संज्ञा दी है?

(1) प्रारंभिक काल (2) आदिकाल
(3) सिद्ध सामंत काल (4) बीजवपनकाल

13. हिंदी साहित्य के मध्यकाल की काल सीमा क्या मानी जाती है?

(1) 1350 ई. से 1857 ई. तक
(2) 1500 ई. से 1800 ई. तक
(3) 1500 ई. से 1600 ई. तक
(4) 1600 ई. से 1700 ई. तक

14. 'नामकरण' से संबंधित कौन सा कथन सही है?

(1) काल विभाजन में साहित्यिक प्रवृत्तियों का ध्यान नहीं रखा जाता।
(2) साहित्येतिहासकारों द्वारा कालों का नामकरण समय की सीमा और साहित्यिक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर किया जाता है।
(3) नामकरण केवल ऐतिहासिक काल की समयसीमा से संबंधित होता है।
(4) कालों का नामकरण समाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों से स्वतंत्र रूप से किया जाता है।

15. आदिकाल को चारण काल के नाम से नामकरण किसने किया?

(1) हजारी प्रसाद द्वेदी जी (2) बच्चन सिंह
(3) शुक्ल जी (4) ग्रियर्सन

16. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन (Assertion A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण (Reason R) के रूप में;

अभिकथन (A): आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के आदिकाव्य काल को "प्राचीन काल" कहा है।
कारण (R): शुक्ल जी का मानना था कि इस काल में संस्कृत और प्राकृत साहित्य का प्रभाव अधिक था।
सही उत्तर:
(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(3) (A) सत्य है परन्तु (R) असत्य नहीं हैं।
(4) (A) सत्य नहीं है परन्तु (R) सत्य हैं।

17. हिंदी साहित्य के मध्यकाल का प्रमुख काव्य रूप क्या था?
(1) दोहा (2) गीतिका
(3) चौपाई (4) पद

18. रीतिकाव्य काल की समाप्ति किसके साथ मानी जाती है?
(1) 1850 ई. के बाद (2)1800 ई. के बाद
(3)1700 ई. के बाद (4) 1900 ई. के बाद

19. सूची-I में दिए गए कालखंडों को सूची-II में दिए गए उनके नामकरण के आधारों से मिलाइए:

सूची-I	सूची-II
A. आदिकाल	I. काव्य प्रवृत्तियों के आधार पर
B. मध्यकाल	II. सामाजिक और सांस्कृतिक परिघटनाओं के आधार पर
C. रीतिकाल	III. ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर
D. आधुनिक काल	IV. भाषिक और साहित्यिक विशेषताओं के आधार पर

सही मेल:
(1) A-IV, B-III, C-I, D-II
(2) A-I, B-II, C-IV, D-III
(3) A-III, B-IV, C-II, D-I
(4) A-II, B-I, C-III, D-IV

20. हिंदी साहित्य के आदिकाल की काल सीमा क्या मानी जाती है?
(1) 500 ई.पू. से 1200 ई. तक
(2) 1200 ई. से 1700 ई. तक
(3) 1700 ई. से 1900 ई. तक
(4) 1900 ई. से वर्तमान तक

21. 'रीतिकाल' को अन्य दूसरे किस नाम से जाना जाता है
(1) स्वर्णकाल (2) बीजवपन काल
(3) श्रृंगारकाल (4) गद्य काल

22. 'काल विभाजन' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) 'काल विभाजन' साहित्यिक प्रवृत्तियों और ऐतिहासिक संदर्भों पर आधारित होता है।
(2) 'काल विभाजन' में केवल समय की सीमाओं का ध्यान रखना आवश्यक होता है।
(3) 'काल विभाजन' में साहित्यिक रुझानों और घटनाओं के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।
(4) साहित्येतिहासकारों को 'काल विभाजन' में सतर्कता और शोध पर ध्यान देना चाहिए।

23. हिंदी साहित्य के रीतिकाव्य काल की काल सीमा क्या है?
(1) 1600 ई. से 1700 ई. तक
(2) 1700 ई. से 1850 ई. तक
(3)1850 ई. से 1900 ई. तक
(4) 1900 ई. से 1950 ई. तक

24. रीतिकाव्य काल का प्रारंभ किससे हुआ था?
(1) संस्कृत साहित्य से
(2) भक्तिकाव्य से
(3) मुग़ल शासन के प्रभाव से
(4) संस्कृत काव्य के पुनरुद्धार से

25. सूची-I में दिए गए कालखंडों को सूची-II में दिए गए उनके प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों से मिलाइए:

सूची-I	सूची-II
A. वीरगाथाकाल	I. वीर रस की प्रधानता
B. भक्तिकाल	II. भक्ति और धार्मिक साहित्य
C. रीतिकाल	III. श्रृंगारी और काव्यशास्त्रीय प्रवृत्तियाँ
D. आधुनिक काल	IV. गद्य साहित्य का विकास

सही मेल:
(1) A-I, B-II, C-III, D-IV
(2) A-II, B-III, C-IV, D-I
(3) A-III, B-IV, C-I, D-II
(4) A-IV, B-I, C-II, D-III

उत्तर कुंजी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(1)	(3)	(2)	(1)	(1)	(3)	(4)	(4)	(4)	(2)
11	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
(1)	(4)	(4)	(2)	(4)	(3)	(3)	(3)	(1)	(1)
21	**22**	**23**	**24**	**25**					
(3)	(2)	(2)	(3)	(1)					

स्पष्टीकरण

पिछले वर्ष के परीक्षा प्रश्न के उत्तर

1. उत्तर (4):

व्याख्या सही उत्तर है: **(4) जार्ज ग्रियर्सन।** जॉर्ज ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक "द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान" (1888) में हिंदी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन का सर्वप्रथम प्रयास किया। उन्होंने हिंदी साहित्य को विभिन्न कालों में विभाजित किया और प्रत्येक काल की विशेषताओं का वर्णन किया।

2. उत्तर (1):

व्याख्या सही उत्तर है: **(1) राहुल सांकृत्यायन।** आदिकाल को 'सिद्ध सामंत काल' की संज्ञा राहुल सांकृत्यायन ने दी है। उन्होंने इस काल को सिद्धों और सामंतों के प्रभाव के कारण यह नाम दिया। यहाँ अन्य विद्वानों के नाम भी दिए गए हैं, लेकिन उन्होंने आदिकाल को अलग-अलग नाम दिए हैं- **रामकुमार वर्मा:** उन्होंने आदिकाल को 'संधिकाल' और 'चारणकाल' कहा। **हजारी प्रसाद द्विवेदी:** उन्होंने आदिकाल को केवल 'आदिकाल' ही कहा। **रामचंद्र शुक्ल:** उन्होंने आदिकाल को 'वीरगाथा काल' कहा।

3. उत्तर (1):

व्याख्या A. रीतिकाल – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के उत्तर मध्यकाल (1700-1900 वि.) को 'रीतिकाल' नाम दिया। **B. अलंकृत काल –** मिश्रबंधुओं ने इस काल को 'अलंकृत काल' कहा। **C. श्रृंगार काल –** आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इस काल को 'श्रृंगार काल' नाम दिया। **D. रीतिकाव्य –** जार्ज ग्रियर्सन ने इस काल को 'रीतिकाव्य' कहा। उपरोक्त मिलान के अनुसार, **सही विकल्प है: 1. A-IV, B-I, C-III, D-II**

4. उत्तर (3):

व्याख्या मिश्रबंधुओं ने हिन्दी साहित्य को पांच कालों में बांटा था। ये काल ये थे: प्रारंभिक काल, मध्यकाल, उत्तर मध्यकाल, आधुनिक काल, वर्तमान काल। मिश्रबंधु तीन भाई थे - गणेश बिहारी, श्याम बिहारी, और शुकदेव बिहारी। मिश्रबंधुओं ने 'मिश्रबंधु विनोद' और 'हिन्दी नवरत्न' जैसे महान ग्रंथ लिखे। 'मिश्रबंधु विनोद' के चार भाग हैं। इनमें से पहले तीन भागों का प्रकाशन 1913 में हुआ था और चौथा भाग 1934 में प्रकाशित हुआ था। **मिश्रबंधुओं ने अपने साहित्यिक काल विभाजन में 'प्रौढ़ माध्यमिक काल' की अवधि 1561 से 1680 विक्रमी संवत् निर्धारित की है।** 'हिन्दी नवरत्न' में हिन्दी के श्रेष्ठ नौ कवियों तुलसी, सूर, देव, बिहारी, भूषण, केशव, मतिराम, चंदबरदायी, हरिश्चन्द्र को श्रेणीबद्ध किया गया है।

5. उत्तर (3):

व्याख्या

A. रीतिकाव्य: यह **जार्ज ग्रियर्सन** से संबंधित है। हिंदी साहित्य के इतिहास का पहला कालविभाजन प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी पुस्तक 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ़ हिंदुस्तान' (1888) में हिंदी साहित्य को 12 भागों में विभाजित किया।

B. अलंकृत काल: यह **मिश्रबंधु** से संबंधित है। मिश्रबंधु तीन भाई थे - गणेश बिहारी, श्याम बिहारी, और शुकदेव बिहारी। मिश्रबंधुओं ने 'मिश्रबंधु विनोद' नामक ग्रंथ लिखा।

C. कलाकाल: डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने हिंदी साहित्य के रीतिकाव्य (रीतिकाल) को 'कलाकाल' नाम दिया है। उनका मानना था कि इस काल में काव्यशास्त्र, अलंकार, और काव्यशैली पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया था, जिससे काव्य में एक विशेष प्रकार की कला और शास्त्रीयता का समावेश हुआ।

D. रीतिकाल: यह **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** से संबंधित है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल कहा है। इनका ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' 1929 में प्रकाशित हुआ। इस प्रकार, सही सुमेलित जोड़ी है:

3. A-IV, B-I, C-II, D-III

6. उत्तर (*):

व्याख्या आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल को **'श्रृंगारकाल'** नाम दिया है। **मिश्रबंधुओं** ने **रीतिकाल** को **'अलंकृत काल'** कहा है। जबकि आचार्य रमाशंकर शुक्ल रसाल ने रीतिकाल को कला काल का नाम दिया। अत: सही उत्तर **4.** (A) सत्य नहीं है परन्तु (R) सत्य हैं।

7. उत्तर (1):

व्याख्या इस प्रश्न का सही उत्तर है: **(1) केवल (A), (B) और (D)**। भारतीय काव्यशास्त्र में **'प्रतिभा'** को **काव्य-निर्माण की मौलिक क्षमता** माना गया है। यह **काव्य हेतु (कारण)** के रूप में प्रमुख भूमिका निभाती है। **(A) प्रतिभा अपूर्व वस्तुओं के निर्माण की क्षमता है।** सही। आचार्य मम्मट ने प्रतिभा को **"नवीन व अपूर्व वस्तुओं की सर्जनात्मक क्षमता"** के रूप में वर्णित किया है। **(B) प्रतिभा के दो भेद होते हैं: कारयित्री प्रतिभा और भावयित्री प्रतिभा।** सही। यह विभाजन बाद के आचार्यों द्वारा किया गया — **कारयित्री प्रतिभा**: काव्य की रचना में दक्षता। **भावयित्री प्रतिभा**: भावों की कल्पना करने की शक्ति। **(D) प्रतिभा काव्य का हेतु है।** सही। यह कथन **काव्य हेत्वर्थ न्यात** के अंतर्गत मम्मट द्वारा स्थापित है।

8. उत्तर (3):

व्याख्या हिंदी साहित्येतिहास के इन कालों का कालक्रमानुसार (आरोही क्रम में) सही व्यवस्थापन इस प्रकार है:

युग / आंदोलन	कालावधि (लगभग)	विशेषता
(A) द्विवेदी युग	1900–1918 ई.	भाषा शुद्धिकरण, राष्ट्रवाद, गद्य पर बल — प्रतिनिधि: महावीरप्रसाद द्विवेदी
(D) छायावाद	1918–1936 ई.	व्यक्तिवाद, रहस्यवाद, सौंदर्य और प्रकृति — प्रतिनिधि: जयशंकर प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी
(C) प्रगतिवाद	1936–1943 ई.	समाजवादी विचार, यथार्थवाद, जनजीवन की पीड़ा — प्रतिनिधि: नागार्जुन, त्रिलोचन, यशपाल
(B) प्रयोगवाद	1943–1954 ई.	नवीनता, व्यक्तिगत अनुभव, शैलीगत प्रयोग — प्रतिनिधि: अज्ञेय (तारसप्तक के माध्यम से)

9. उत्तर (3):

व्याख्या "बीजवपन काल" नाम आचार्य **महावीर प्रसाद द्विवेदी** द्वारा हिंदी साहित्य के आदिकाल को दिया गया था। **महावीर प्रसाद द्विवेदी** का विचार: आदिकाल वह अवस्था थी जहाँ हिंदी की "बीजों" की उपज हुई—पूर्ववर्ती अपभ्रंश की साहित्यिक परंपराएं फलती-फूलती दिखती हैं । **आचार्य रामचंद्र शुक्ल कथन:** "यह वीरगाथा काल है क्योंकि इस काल की प्रधान प्रवृत्ति वीर-गाथात्मक काव्य की थी।" **. डॉ. रामकुमार वर्मा कथन:** "हिंदी साहित्य का आरंभ अपभ्रंश काव्य से होता है, और यह काल चारण कवियों की प्रधानता के कारण चारण काल कहा जाना चाहिए।" **नामकरण: 'संधिकाल एवं चारणकाल', राहुल सांकृत्यायन कथन:** "इस काल में सिद्धों और सामंतों की प्रधानता रही, अतः यह नाम उपयुक्त है।" **नामकरण: 'सिद्ध सामंत काल'**

10. उत्तर (3):

व्याख्या

(A) आदिकाल - **(III) हज़ारी प्रसाद द्विवेदी** हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल की विभिन्न प्रवृत्तियों को समाहित करने वाला यह नाम दिया।

(B) वीरगाथा काल - **(IV) रामचंद्र शुक्ल** आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल में वीरगाथात्मक रचनाओं की प्रधानता के आधार पर यह नामकरण किया।

(C) अपभ्रंश काल - **(I) बच्चन सिंह** बच्चन सिंह ने हिंदी साहित्य का इतिहास लिखते समय आदिकाल के एक बड़े हिस्से को 'अपभ्रंश काल' के रूप में देखा।

(D) सिद्ध-सामंत काल - **(II) राहुल सांकृत्यायन** राहुल सांकृत्यायन ने इस काल में सिद्धों की वाणियों और सामंती जीवन के चित्रण को महत्व देते हुए यह नाम दिया।

11. उत्तर (4):

व्याख्या आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने कालजयी ग्रंथ **'हिंदी साहित्य का इतिहास'** (प्रकाशित: 1929 ई.) में हिंदी साहित्य के 900 वर्षों के इतिहास को चार प्रमुख कालों में विभाजित किया है: **आदिकाल: वीरगाथा काल** (संवत् 1050 से संवत् 1375 तक) **पूर्व मध्यकाल: भक्तिकाल** (संवत् 1375 से संवत् 1700 तक) **उत्तर मध्यकाल: रीतिकाल** (संवत् 1700 से संवत् 1900 तक) **आधुनिक काल: गद्य काल** (संवत् 1900 से संवत् 1984 तक)।

अभ्यास-प्रश्न के उत्तर :

1. उत्तर (1):

व्याख्या हिंदी साहित्य के काल विभाजन और नामकरण में साहित्यिक प्रवृत्तियों और ऐतिहासिक संदर्भों का ध्यान रखना आवश्यक है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि किसी भी कालखंड के साहित्य को समझने के लिए उस समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों का ज्ञान आवश्यक होता है। साहित्यिक प्रवृत्तियाँ और ऐतिहासिक संदर्भ मिलकर उस काल के साहित्य की विशेषताओं को परिभाषित करती हैं। जैसे

आदिकाल (वीरगाथाकाल): इस काल में वीरता और युद्ध संबंधी कथाएँ प्रमुख थीं, जो तत्कालीन समाज की सैन्य प्रवृत्तियों को दर्शाती हैं।

भक्तिकाल: इस अवधि में भक्ति आंदोलन के प्रभाव से धार्मिक और आध्यात्मिक रचनाओं की प्रधानता थी, जो समाज में धार्मिक जागरण को प्रतिबिंबित करती हैं।

रीतिकाल: इस काल में श्रृंगार और अलंकारिक काव्यशास्त्र की प्रधानता थी, जो तत्कालीन दरबारी संस्कृति और कला के प्रति रुचि को दर्शाती हैं। **अत: सही उत्तर वाला विकल्प: (1)।**

2. उत्तर (3):

व्याख्या हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों द्वारा दिए गए नामों के सही मेल:

A. जार्ज ग्रियर्सन -III. चारणकाल। सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने हिन्दी साहित्य के इतिहास पर 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिट्रेचर ऑफ़ हिन्दुस्तान' नाम की किताब लिखी थी। यह किताब साल 1888 में प्रकाशित हुई थी।

B. मिश्रबंधु - IV. परिवर्तन काल। मिश्रबंधु द्वारा लिखित हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथ का नाम "मिश्रबंधु विनोद" है,

जिसे गणेश बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र और श्याम बिहारी मिश्र ने मिलकर लिखा था।

C. आचार्य रामचंद्र शुक्ल - II. रीतिकाल। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का प्रसिद्ध इतिहास ग्रंथ "हिन्दी साहित्य का इतिहास" है, जिसे उन्होंने 1929 में "हिन्दी शब्दसागर" की भूमिका के रूप में प्रकाशित किया था।

D. हजारी प्रसाद द्विवेदी - I. आदिकाल। हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रमुख इतिहास ग्रंथ "हिंदी साहित्य की भूमिका" और "हिंदी साहित्य का आदिकाल" हैं। अत: सही उत्तर वाला विकल्प**: 3.A-III, B-IV, C-II, D-I**

3. **उत्तर (2):**

व्याख्या आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के आदिकाल को 'वीरगाथाकाल' कहा है। इस काल में वीरता से संबंधित काव्य रचनाओं की प्रमुखता थी, जिनमें से '**पृथ्वीराज रासो**' एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह ग्रंथ चंद्रबरदाई द्वारा लिखित पृथ्वीराज चौहान की वीरता और गौरव का वर्णन करता है, जो इस काल की विशेषता को प्रदर्शित करता है।

4. **उत्तर (1):**

व्याख्या आचार्य रामविलास शर्मा ने हिंदी साहित्य के आधुनिक काल को "नवजागरण काल" कहा है। उनके अनुसार, इस काल में साहित्य ने सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने इसे हिंदी नवजागरण की प्रक्रिया से जोड़ा, जिसमें 1857 के स्वाधीनता संग्राम से लेकर भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी और छायावाद तक के साहित्यिक आंदोलनों को शामिल किया। इस प्रकार, **कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, और (R) कथन (A) की उचित व्याख्या प्रदान करता है।**

5. **उत्तर (1):**

व्याख्या हिंदी साहित्य के काल विभाजन में 'आदिकाल' (प्रारंभिक काल) के अंतर्गत मुख्यतः **लौकिक काव्य** शामिल हैं। इस काल में वीरगाथाएँ, लोककथाएँ और ऐतिहासिक काव्य रचनाएँ प्रचलित थीं, जो समाज के सामान्य जीवन, वीरता, और लोक संस्कृति को प्रतिबिंबित करती थीं। लौकिक काव्य: इसमें वीरगाथाएँ, लोककथाएँ, और ऐतिहासिक काव्य शामिल हैं, जो समाज के सामान्य जीवन और संस्कृति को दर्शाते हैं। अन्य आदिकालीन काव्य धाराएं- सिद्ध, नाथ , जैन, रासो ।

6. **उत्तर (3):**

व्याख्या "हिन्दी साहित्य के रीतिकाल का श्रृंगार काल" यह नाम **विश्वनाथ प्रसाद मिश्र** ने रखा था। उन्होंने रीतिकाव्य के अध्ययन में इस काल को विशेष रूप से **श्रृंगारी प्रवृत्तियों** का काल माना। उनके अनुसार रीतिकाव्य में श्रृंगार रस का अत्यधिक प्रचलन था, और इस कारण से उन्होंने इसे **"श्रृंगार काल"** के रूप में परिभाषित किया। रीतिकाव्य वह समय था, जब साहित्य में श्रृंगार, वीरता, श्रृंगारी रस, और ऐश्वर्य का प्रधानता थी।

7. **उत्तर (4):**

व्याख्या सही मेल: **A. मिश्र बंधु - III. प्रौढ़ माध्यमिक काल।** मिश्र बंधुओं ने हिंदी साहित्य के काल विभाजन में 'प्रौढ़ माध्यमिक काल' (सन् 1561-1680) को परिभाषित किया है, जिसमें काव्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र का विकास की ओर अग्रसर हुआ। **B. डॉ.नगेन्द्र - II. जागरण-सुधार काल।** डॉ.नगेन्द्र ने हिंदी साहित्य के काल द्वेदी युग को 'जागरण-सुधार काल' (सन् 1900-1918) को शामिल किया है, जो सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण का प्रतीक है। **C. डॉ. रामकुमार वर्मा - IV. संधि व चारणकाल।** डॉ. वर्मा ने काल विभाजन में 'संधि काल' (वि. 750-1000) और 'चारणकाल' (वि.1000-1375) को परिभाषित किया है, जो हिंदी साहित्य के प्रारंभिक चरणों को दर्शाते हैं। **D. बच्चन सिंह - I. अपभ्रंश काल।** बच्चन सिंह ने 'अपभ्रंश काल' को हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में पहचाना है, जिसमें अपभ्रंश भाषा और साहित्य का विकास हुआ। आदिकाल को भाषा के आधार पर नामकरण बच्चन सिंह ने ही किया। अत: सही विकल्प वाला उत्तर: **4.A-III, B-II, C-IV, D-I**

8. **उत्तर (4):**

व्याख्या हिंदी साहित्य के काल विभाजन में 'नामकरण' का उद्देश्य केवल समय की सीमाओं को स्पष्ट करना नहीं होता, बल्कि यह साहित्यिक आंदोलनों, समकालीन सामाजिक परिवर्तनों, और साहित्यिक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इससे साहित्य के विभिन्न कालखंडों की विशेषताओं, प्रवृत्तियों और सामाजिक-आर्थिक संदर्भों को समझने में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए, 'भक्तिकाल' नामकरण में भक्ति आंदोलन की धार्मिक और सामाजिक प्रभावशीलता को ध्यान में रखा गया है, न कि केवल कालावधि को। इस प्रकार, नामकरण में साहित्यिक और सामाजिक संदर्भों का समावेश आवश्यक होता है। अत: सही उत्तर: **(4) नामकरण का उद्देश्य केवल समय की सीमाओं को स्पष्ट करना होता है।**

9. **उत्तर (4):**

व्याख्या वीरगाथाकाल (सं.1050-1375 वि.): यह काल हिंदी साहित्य के आदिकाल के रूप में जाना जाता है, जिसमें वीरता और शौर्य से संबंधित काव्य रचनाएँ प्रचलित थीं।
भक्तिकाल (सं.1375-1700 वि.): इस काल में भक्ति आंदोलन के प्रभाव से धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों पर आधारित काव्य रचनाएँ प्रमुख थीं।
रीतिकाल (सं.1700-1900 वि.): इस काल में काव्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र का विकास हुआ, और काव्य में श्रृंगार रस की प्रधानता थी।

आधुनिक काल (सं.1900 से वर्तमान तक): इस काल में गद्य साहित्य का विकास हुआ, और सामाजिक, राजनीतिक विषयों पर आधारित रचनाएँ सामने आईं। सभी का विभाजन आचार्य शुक्ल अनुसार है।

अत: सही विकल्प: **1.A-I, B-II, C-III, D-IV**

10. उत्तर (2):

व्याख्या 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी साहित्य का एक प्रमुख महाकाव्य है, जिसे कवि चंदबरदाई ने रचा है। यह काव्य सम्राट पृथ्वीराज चौहान के जीवन और वीरता का वर्णन करता है। हिंदी साहित्य के काल विभाजन में इसे **'आदिकाल'** के अंतर्गत रखा जाता है, जो लगभग 1050 से 1375 तक का अवधि को दर्शाता है। इस काल में वीरगाथाएँ और शौर्य से संबंधित काव्य रचनाएँ प्रमुख थीं, और 'पृथ्वीराज रासो' इस परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, चंदबरदायी हिंदी के प्रथम महाकवि माने जाते हैं और इनका '**पृथ्वीराज रासो**' हिंदी का प्रथम महाकाव्य है।

11. उत्तर (1):

व्याख्या अभिकथन (A): आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य के मध्यकाल को "भक्ति काल" कहा है। यह कथन सत्य है। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य के मध्यकाल को "भक्ति काल" के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें भक्ति आंदोलन का प्रमुख प्रभाव था।

कारण (R): द्विवेदी जी के अनुसार, इस काल में भक्ति आंदोलन ने साहित्यिक दृष्टि से विशेष प्रभाव डाला था। यह भी सत्य है। द्विवेदी जी के अनुसार, भक्ति आंदोलन ने साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रभाव डाला, जिससे साहित्य में आध्यात्मिक और भक्ति संबंधी विषयों की प्रधानता बढ़ी। अतः, **दोनों कथन सत्य हैं, और कारण (R) अभिकथन (A) की उचित व्याख्या प्रदान करता है।**

12. उत्तर (4):

व्याख्या महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल को **बीजवपनकाल** की संज्ञा दी है। इसमें 'बीजवपन' का अर्थ है 'बीज बोने का समय', जो साहित्य में नए विचारों और संस्कृतियों के प्रवेश को दर्शाता है। यह काल हिंदी साहित्य में नवचेतना और विकास का प्रतीक है, जहाँ नए साहित्यिक रूप और विषयों की शुरुआत हुई। हिंदी साहित्य का आदिकाल संवत् 1050 से लेकर संवत् 1375 तक अर्थात् महाराज भोज के समय से लेकर हम्मीरदेव के समय के कुछ पीछे तक का माना जा सकता है।

13. उत्तर (4):

व्याख्या हिंदी साहित्य के काल विभाजन में विभिन्न विद्वानों के अनुसार 'मध्यकाल' की समयसीमा में भिन्नता पाई जाती है। मध्यकाल में भक्तिकाल और रीतिकाल का समावेश होता है। इसलिए **विकल्प 1.1350 ई. से 1857 ई.** तक सही उत्तर है।

14. उत्तर (2):

व्याख्या हिंदी साहित्य के काल विभाजन और नामकरण में साहित्येतिहासकार दोनों समयसीमा और साहित्यिक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हैं। उदाहरण के लिए, 'भक्तिकाल' नामकरण में इस अवधि में भक्ति आंदोलन के साहित्यिक प्रभाव को देखा गया है, जबकि 'रीतिकाल' में काव्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र की प्रवृत्तियों को प्रमुखता दी गई है। इस प्रकार, कालों का नामकरण करते समय साहित्यिक प्रवृत्तियों और समयसीमा दोनों का समावेश किया जाता है। अत: सही उत्तर: **(2) साहित्येतिहासकारों द्वारा कालों का नामकरण समय की सीमा और साहित्यिक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर किया जाता है।**

15. उत्तर (4):

व्याख्या ग्रियर्सन ने **आदिकाल** को चारण काल नाम दिया है। हजारी प्रसाद जी ने आदि काल नाम दिया । शुक्ल जी के द्वारा आदिकाल का वीरगाथा काल के नाम से नामकरण किया गया। बच्चन सिंह ने 'अपभ्रंश काल' को हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में पहचाना है

16. उत्तर (3):

व्याख्या अभिकथन (A): आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के आदिकाव्य काल को "प्राचीन काल" कहा है। **यह कथन असत्य है।** आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के आदिकाव्य काल को 'आदिकाव्य काल' या 'प्रारंभिक काल' कहा है, न कि 'प्राचीन काल'।

कारण (R): शुक्ल जी का मानना था कि इस काल में संस्कृत और प्राकृत साहित्य का प्रभाव अधिक था। **यह कथन सत्य है।** शुक्ल जी के अनुसार, आदिकाव्य काल में संस्कृत और प्राकृत साहित्य का प्रभाव हिंदी साहित्य पर अधिक था, जिससे इस काल की विशेषताएँ निर्धारित होती हैं। अतः, **अभिकथन (A) असत्य है, लेकिन कारण (R) सत्य है।**

17. उत्तर (3):

व्याख्या हिंदी साहित्य के मध्यकाल में **चौपाई छंद** का विशेष महत्व था। यह छंद विशेष रूप से भक्तिकाव्य में प्रचलित था, जिसमें रामचरितमानस जैसी रचनाएँ शामिल हैं। तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस में चौपाई छंद का व्यापक उपयोग किया गया है, जो इस काल की काव्यशैली का प्रमुख उदाहरण है।

18. उत्तर (3):

व्याख्या हिंदी साहित्य के रीतिकाव्य काल की अवधि पर विद्वानों में विभिन्न मत हैं, लेकिन सामान्यतः इसे सन् **1850 ई. के बाद** से मान्यता प्राप्त है। यह काल लगभग 1700 ई. से 1900 ई. तक माना जाता है, जिसमें काव्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र का विकास हुआ। इस अवधि में श्रृंगार रस, वीर रस और नीति परक काव्य का प्रभाव देखने को मिलता है।

19. उत्तर (1):

व्याख्या

A. आदिकाल: इस काल का नामकरण भाषिक और साहित्यिक विशेषताओं के आधार पर किया गया है, जिसमें प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं का प्रभाव और वीरगाथाओं की प्रधानता रही।

B. मध्यकाल: यह काल ऐतिहासिक घटनाओं, जैसे मुस्लिम शासन के प्रभाव, के आधार पर 'भक्तिकाल' के रूप में जाना जाता है, जिसमें भक्ति आंदोलन का प्रसार हुआ।

C. रीतिकाल: काव्य प्रवृत्तियों, जैसे काव्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र के विकास, के आधार पर इस काल का नामकरण 'रीतिकाल' किया गया।

D. आधुनिक काल: सामाजिक और सांस्कृतिक परिघटनाओं, जैसे पुनर्जागरण और सुधार आंदोलनों, के आधार पर इस काल का नामकरण 'आधुनिक काल' किया गया। अत: सही विकल्प: **1.A-IV, B-III, C-I, D-II**

20. उत्तर (1):

व्याख्या हिंदी साहित्य के आदिकाल की कालसीमा पर विद्वानों में विभिन्न मत हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल की अवधि संवत 1050 से 1375 तक मानी है, जो लगभग 993 से 1318 ईस्वी के बराबर है। हालांकि, कुछ विद्वान आदिकाल की अवधि को 8वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से 14वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक मानते हैं। इस प्रकार, हिंदी साहित्य के आदिकाल की कालसीमा पर विद्वानों में मतभेद हैं, लेकिन सामान्यतः इसे **500 ई.पू. से 1200 ई.** तक माना जाता है।

21. उत्तर (3):

व्याख्या रीतिकाल को हिंदी साहित्य में **'श्रृंगारकाल'** भी कहा जाता है। इस काल में श्रृंगार रस की प्रधानता थी, और कवियों ने श्रृंगारी प्रवृत्तियों पर आधारित रचनाएँ कीं। उदाहरण के लिए, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इस काल को 'श्रृंगारकाल' के रूप में परिभाषित किया है। **आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र** ने 'रीतिकाल' को **'श्रृंगारकाल'** कहा है, किन्तु अधिकांश विद्वान आज भी इस काल को रीतिकाल कहना ही अधिक उपयुक्त समझते हैं। **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने इसका नामकरण 'रीतिकाल' ही किया है।

22. उत्तर (2):

व्याख्या 'काल विभाजन' करते समय केवल समयसीमा का ही ध्यान नहीं रखा जाता, बल्कि साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, ऐतिहासिक घटनाएँ, सामाजिक और सांस्कृतिक परिघटनाएँ भी महत्वपूर्ण आधार होते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी साहित्य के 'भक्तिकाल' का नामकरण भक्ति आंदोलन की साहित्यिक प्रवृत्ति के आधार पर किया गया है, न कि सिर्फ समयसीमा के आधार पर। इसी प्रकार, 'रीतिकाल' का नामकरण काव्य प्रवृत्तियों के आधार पर हुआ है। इसलिए, काल विभाजन में समयसीमा के साथ-साथ साहित्यिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों का भी ध्यान रखना आवश्यक होता है। **अत: सही उत्तर: (2) कालों के नामकरण में केवल समय की सीमाओं का ध्यान रखना आवश्यक होता है।**

23. उत्तर (2):

व्याख्या हिंदी साहित्य के रीतिकाव्य काल की समयसीमा पर विद्वानों में कुछ भिन्नताएँ हैं, लेकिन सामान्यतः इसे **1700 ई. से 1850 ई.** तक माना जाता है। इस काल में काव्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र का विकास हुआ, और काव्य में श्रृंगार रस की प्रधानता थी। रीतिकाव्य काल में काव्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र का विकास हुआ, और काव्य में श्रृंगार रस की प्रधानता थी।

24. उत्तर (3):

व्याख्या रीतिकाल का प्रारंभ **मुग़ल शासन के प्रभाव से** हुआ था। मुग़ल दरबार की संस्कृति और संस्कृत साहित्य के प्रभाव ने हिंदी काव्यशास्त्र में नए आयाम जोड़े, जिससे रीतिकाव्य का विकास हुआ। इस काल में दरबारी संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा गया, जिसने काव्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र की ओर प्रवृत्त किया।

25. उत्तर (1):

व्याख्या वीरगाथाकाल: इस काल में वीर रस की प्रधानता थी, जिसमें युद्ध और वीरता से संबंधित काव्य रचनाएँ प्रमुख थीं। **B. भक्तिकाल:** भक्ति आंदोलन के प्रभाव से इस काल में भक्ति और धार्मिक साहित्य की रचनाएँ प्रचलित थीं। **C. रीतिकाल:** काव्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र की प्रवृत्तियों के आधार पर इस काल में श्रृंगारी और काव्यशास्त्रीय प्रवृत्तियाँ प्रमुख थीं। **D. आधुनिक काल:** गद्य साहित्य का विकास और सामाजिक-सांस्कृतिक परिघटनाओं के प्रभाव से इस काल की विशेषता थी। अत: सही उत्तर वाला विकल्प**: 1. A-I, B-II, C-III, D-IV**

भाग 2

हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से आधुनिक काल तक) प्रमुख रचनाकार रचनाएँ और प्रवृतियाँ

भाग 2

हिंदी साहित्य का इतिहास

(आदिकाल से आधुनिक काल तक)
प्रमुख रचनाकार, रचनाएं और प्रवृतियां

पिछले वर्ष के परीक्षा प्रश्न

[2022]

1. हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास 'इस्तवार द ला लिरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी' ग्रंथ किस भाषा में लिखा गया है?
(1) जर्मन (2) फ्रेंच
(3) जापानी (4) अंग्रेजी

[2022]

2. रामचंद्र शुक्ल द्वारा विरचित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ का प्रथम प्रकाशन वर्ष क्या है?
(1) 1880 ई. (2) 1919
(3) 1929 (4) 1936 ई.

[2022]

3. 'साहित्य प्रत्येक देश की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।' यह कथन किस विद्वान का है?
(1) रामस्वरूप चतुर्वेदी (2) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(3) रामचंद्र शुक्ल (4) गणपतिचंद्र गुप्त

[2022]

4. निम्न में से श्रीसंप्रदाय का आचार्य किसे माना जाता है?
(1) रामानंद (2) रामानुजाचार्य
(3) वल्लभाचार्य (4) निंबार्काचार्य

[2022]

5. 'प्राकृत पेंगलम' में संकलित कवि नहीं है:
(1) विद्यापति (2) बच्चर
(3) विद्याथर (4) जज्जल

[2022]

6. निम्न में से हालावादी कवि कौन है?
(1) नागार्जुन (2) हरिवंशराय बच्चन
(3) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (4) धूमिल

[2022]

7. निम्न में से 'रीति सिद्ध' धारा के कवि कौन हैं?
(1) केशवदास (2) घनानंद
(3) आलम (4) बिहारी

[2022]

8. 'छोड़ द्रुमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?
भूल अभी से इस जग को पंक्तियाँ किस कवि की है?
(1) जयशंकर प्रसाद
(2) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(3) महादेवी वर्मा
(4) सुमित्रानंदन पंत

[2022]

9. 'भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो ।' यह कथन किस विद्वान का है?
(1) विश्वनाथ त्रिपाठी (2) बच्चन सिंह
(3) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (4) हजारीप्रसाद द्विवेदी

[2022]

10. 'नाथपंथ' का प्रवर्तक किसे माना जाता है?
(1) मत्स्येंद्रनाथ (2) गोरखनाथ
(3) सत्यनाथ (4) जलंधरनाथ

[2022]

11. 'सतसेया के दोहरे ज्यों नावक के तीर ।
देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर ।' यह पंक्तियाँ किस कवि की है?
(1) देव (2) बिहारी
(3) सेनापति (4) घनानंद

[2022]

12. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन A के रूप में लिखित है तो दूसरा कारण R के रूप में;
अभिकथन A: रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास के आदिकाल को 'वीरगाथा काल' की संज्ञा दी है
कारण R: रामचंद्र शुक्ल के अवचेतन में वीरता के प्रति एक आकर्षण था । भक्ति काल, रीतिकाल और
आधुनिक काल में इसके लिए अवसर न था, इसलिए यह नाम आदिकाल को ही दिया जा सकता था ।
उपर्युक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
(3) A सही है लेकिन R सही नहीं है।
(4) A सही नहीं है लेकिन R सही है।

[2022]

13. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन A के रूप में लिखित है तो दूसरा कारण R के रूप में;

अभिकथन A: मध्यकालीनता अवरोध, जड़ता और रूढ़िवादिता की प्रवृत्तियों की वाहक होती है ।

कारण R: आधुनिकता ने मध्यकालीनता को विस्थापित कर स्वतंत्रता, समानता, न्याय, बंधुत्व और जनतंत्र की चेतना का प्रसार किया।

उपर्युक्त कथन के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन RA की सही व्याख्या नहीं है
(3) A सही है लेकिन R सही नहीं है
(4) A सही नहीं है लेकिन R सही है

[2022]

14. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन A के रूप में लिखित है तो दूसरा कारण R के रूप में;

अभिकथन A: खड़ीबोली के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज का अमूल्य योगदान है।

कारण R: औपनिवेशिक शासक खड़ी बोली का प्रसार कर देशभाषाओं को हाशिए में पर धकेलना चाहते थे

उपर्युक्त कथन के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R सही नहीं है।
(4) A सही नहीं है लेकिन R सही है।

[2022]

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन A के रूप में लिखित है तो दूसरा कारण R के रूप में;

अभिकथन A: भारतेंदु हरिशचंद्र ने नाटकों को साहित्यिक रूप दिया।

कारण R: भारतेंदु पारसी नाटकों की सस्ती रूचि से असहमत थे। इसीलिए वे गंभीर नाटकों के पक्षधर थे

उपर्युक्त कथन के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
(3) A सही है लेकिन R सही नहीं है।
(4) A सही नहीं है लेकिन R सही है।

[2022]

16. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन A के रूप में लिखित है तो दूसरा कारण R के रूप में;

अभिकथन A: भारतेन्दु युग नवजागरण की चेतना का युग है।

कारण R: भारतेन्दु युग में सामाजिक आंदोलन के प्रभाव से जनता में नव चेतना का उदय हुआ तथा विधवा, विवाह, सती प्रथा, नारी शिक्षा, अंधविश्वास और अस्पृश्यता निवारण की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने वाली रचनाएँ लिखी गई।

उपर्युक्त कथन के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R A की सही व्याख्या है
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
(3) A सही है लेकिन R सही नहीं है
(4) A सही नहीं है लेकिन R सही है।

[2022]

17. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन A के रूप में लिखित है तो दूसरा कारण R के रूप में;

अभिकथन A: प्रगतिवाद एक वैचारिक आंदोलन था।

कारण R: उपनिवेशवाद और सामंतवाद का विरोध, स्वतंत्रता समानता और न्याय के आदर्श मुक्ति चेतना को लोकव्यापी बनाने में प्रगतिशील आंदोलन की महती भूमिका है।

उपर्युक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
(3) A सही है लेकिन R सही नहीं है।
(4) A सही नहीं है लेकिन R सही है

[2022]

18. साहित्येतिहास ग्रंथों को उनके प्रथम प्रकाशन वर्ष के अनुसार पहले से बाद के बढ़ते हुए क्रम में लगाइये

A. हिंदी साहित्य की भूमिका
B. द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान
C. शिवसिंह सरोज
D. इस्तवार द ला लितरेत्यूर ऐन्दुई ऐ एंदुस्तानी

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A, D, B, C (2) B, C, A, B
(3) D, C, B, A (4) C, D, A, B

[2022]

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I: बिहारी 'गागर में सागर' भरने वाले कवि माने जाते हैं।